ये अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

1) अनेक देश, अनेक भाषायें, अनेक रूप-रंग होते भी सबके दिल में एकता दिखाई दे क्योंकि एक बाप के बच्चे हो। सब एक ही वृक्ष की डालियां, एक की श्रीमत पर चलने वाले हो। भिन्नता में एकता दिखाना, बिगड़ी को बनाना, अनेकता में एकता लाना, ये सबसे बड़ी सेवा है। यही कमाल है और यही सफलता का आधार है।

2) किसी भी कार्य की सफलता की दो श्रेष्ठ भुजायें हैं: 1- आपसी विश्वास और 2- एकता, जहाँ संगठित रूप में सभी की एकमत है, आपस में एक दो के प्रति विश्वास है, वहाँ सफलता गले का हार है। संस्कार भिन्न-भिन्न हैं और रहेंगे भी लेकिन अगर कोई का संस्कार टकराने वाला है तो दूसरा ताली नहीं बजावे। हर एक अपने को चेंज कर ले तो एकता कायम रह सकती है।

3) एकता के लिए स्वयं में समाने की शक्ति चाहिए, इससे दूसरे का संस्कार भी अवश्य शीतल हो जायेगा। सदा एक दो में स्नेह की, श्रेष्ठता की भावना से सम्पर्क में आओ, गुणग्राही बनो तो एकता कायम रह सकती है। आपके संगठन की शुभ भावना अनेक आत्माओं को भावना का फल दिलाने के निमित्त बनेगी। उन्हें नई राह मिलेगी।

4) जैसे बाप ने आप सबको कोने-कोने से ढूंढकर निकाल लिया। अनेक वृक्षों की डालियाँ अब एक ही चन्दन का वृक्ष हो गया। लोग कहते हैं – दो चार मातायें भी एक साथ इकट्ठी नहीं रह सकती और आप मातायें सारे विश्व में एकता स्थापन करने के निमित्त हो, यही आपकी आपसी एकता बाप की प्रत्यक्षता करेगी।

5) ब्राह्मण परिवार की विशेषता है – अनेक होते भी एक। आपके सभी सेवाकेन्द्रों का वायब्रेशन ऐसा हो जो सबको महसूस हो कि ये अनेक नहीं लेकिन एक हैं। आपकी एकता का वायब्रेशन सारे विश्व में एक धर्म, एक राज्य स्थापन करेगा। तो विशेष अटेन्शन देकर भिन्नता को मिटाकर एकता कायम करो।

6) संगठन में हर एक की विशेषता को देखना, विशेषता ही ग्रहण करना और कमजोरियों को मिटाने का प्रयत्न करना - यही विधि है, एकता का संगठन मजबूत करने की। जैसे आप सबका उठना, बोलना, चलना एक जैसा है या सबकी एक जैसी बातें, एक ही गति, एक ही रीति, एक ही नीति है, ऐसे ही संस्कार भी समान दिखाई दें। भिन्नता होते भी एक दो में विश्वास रख सबके विचारों को सत्कार दो, यही एकता का आधार है।

7) एकता, स्वच्छता, महीनता, मधुरता और मन, वाणी, कर्म में महानता - यह 5 बातें एक एक के हर कदम से नज़र आयें तो बाप की प्रत्यक्षता सहज हो जायेगी। अभी तक संस्कारों में जो भिन्नता दिखाई देती है, उसे एकता में लाना है। एकता के लिए एक दो की राय को रिगार्ड दो, हाँ जी, हाँ जी करके अपना विचार अवश्य दो, फिर एकता के बन्धन में बंध जाओ, यही एकता सफलता का साधन है।

8) एकता लाने के लिए दो बातें धारण करनी होंगी - एक तो एकनामी बन सदैव हर बात में एक का ही नाम लो, दूसरा - संकल्पों की, समय की और ज्ञान खजाने की इकॉनामी करो। जब सभी ऐसे एकनामी और इकॉनामी वाले बन जायेंगे तब एक बाप में सभी प्रकार की भिन्नता समा जायेगी।

9) जैसे मणकों की विशेषता होती है - एक जैसे मणके माला के एक ही धागे में पिरोये जाते हैं। ऐसे आप सभी वैजयन्ती माला के मणके भी जब एकमत, एक की ही लगन में एकरस स्थिति वाले एक दिखाई देंगे तब ही माला में पिरोये जायेंगे। अगर आपस में दो मतें होती हैं तो वह दूसरी अर्थात् 16000 की माला के दाने बन जाते हैं।

10) एक मत अर्थात् एकता का वातावरण बनाने के लिए समाने की शक्ति धारण करो। भिन्नता को समाओ। हर एक की विशेषताओं को देखो, कमियों को तो बिल्कुल देखना ही नहीं है। जैसे चन्द्रमा अथवा सूर्य को ग्रहण लगता है तो कहते हैं कि देखना नहीं चाहिए, नहीं तो ग्रहचारी बैठ जायेगी। तो किसकी कमी भी ग्रहण है, उसे कभी नहीं देखो।

11) एकता के दो आधार है – एक-फेथ (विश्वास), दूसरा-लव (प्यार)। कभी भी एक दो में विश्वास कम न हो, एक ने कहा दूसरे ने माना... यही विधि है एकता के सूत्र में पिरोने की। दिल का आपसी स्नेह समीप ले आता है। जैसे बाप से सबका स्नेह है ऐसे

परिवार से भी दिल का सच्चा स्नेह हो, इसके लिए स्वमान में रहकर सबको सम्मान दो।

12) ज्ञानी बनने के साथ-साथ स्नेही बनो। स्व की सेवा विश्व सेवा का आधार है। सेवा में सिर्फ दो शब्द याद रखना - एक निमित्त हूँ, दूसरा निर्मान बनना ही है, इससे एकता का वातावरण बनेगा। एक दो के सहयोगी बनेंगे। तेरे मेरे की, मान-शान की, टकराव की भावनायें समाप्त हो जायेंगी।

13) हर एक को दो बातें विशेष ध्यान में रखनी हैं - एक सदा संस्कारों को मिलाने की यूनिटी। दूसरा एक दो में विश्वास रख सदा सन्तुष्ट रहना है और सबको सन्तुष्ट करना है। जब यह दोनों बातें सदा ध्यान पर रहेंगी तब बाप जो है जैसा है, वैसा दिखाई देगा और प्रत्यक्षता होगी।

14) अभी सभी मिलकर एकमत हो सेवा के कोई भी कार्य को धूमधाम से आगे बढ़ाओ। हर ब्राह्मण आत्मा के सहयोग से, शुभ कामनाओं, शुभ भावनाओं से सेवाओं की धूम मचाओ। अगर कोई मुख से बोल नहीं सकते तो मन्सा वायुमण्डल से सुख की वृत्ति, सुखमय स्थिति से सुखमय संसार बनाये। कहाँ जा नहीं सकते हो, तबियत ठीक नहीं है तो घर बैठे यह सेवा करो, सेवा में सहयोगी जरूर बनो तब सर्व के सहयोग से सुखमय संसार बनेगा।

15) दुनिया के आगे अब यही वास्तविकता दिखानी है कि हम सब एक हैं, एक के हैं, एकरस स्थिति वाले हैं। एक की लगन में मगन रह एक का नाम प्रत्यक्ष करने वाले हैं, अब यह न्यारा और प्यारा गोल्डन स्थिति का झण्डा लहराओ। छोटे हो या बड़े हो, बीमार हो या स्वस्थ हो, महारथी हो व घोड़ेसवार, सभी एकमत होकर सहयोगी बनो तो सहज सफलतामूर्त बन जायेंगे।

16) अभी तक अलग-अलग फूल अपनी-अपनी रंगत दिखा रहे हैं लेकिन जब गुलदस्ते के रूप में अपनी खुशबू फैलायेंगे, शक्ति दल प्रत्यक्ष होगा, तब यह संगठन की शक्ति परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनेंगी। अभी एक-एक अलग होने के कारण मेहनत ज्यादा करनी पड़ती है लेकिन जब संगठन एकमत होगा तो मेहनत कम सफलता जास्ती होगी।

17) संगठन का बल, स्नेह का बल, एक दो को सहयोग देने का बल और सहनशीलता का बल जमा करो तो माया कभी वार नहीं कर सकेगी, फिर जयजयकार का नारा लगेगा। जब इतने सभी अनेक होते भी एक दिखाई देंगे, एक की ही लगन में मगन, एकरस स्थिति में स्थित होंगे तब प्रत्यक्षता की निशानी देखने में आयेगी। आप सबकी प्रतिज्ञा ही प्रत्यक्षता को समीप लायेगी।

18) जैसे सर्व आत्माओं को ज्ञान की रोशनी देने के लिये सदैव शुभ भावना व कल्याण की भावना रखते हो। ऐसे अपने इस दैवी संगठन को भी एक-रस स्थिति में स्थित कर संगठन की शक्ति को बढ़ाने का प्रयत्न करो तब आपके इस दैवी संगठन की मूर्त में एकता और एकरस स्थिति का प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार होगा।

19) इस परमात्म-ज्ञान से ही विश्व में एक धर्म, एक राज्य, एक मत की स्थापना होती है। आपके इस ब्राह्मण संगठन की विशेषता – देवता रूप में प्रैक्टिकल चलती है। यह विशेषता ही कमाल करेगी, इससे ही नाम बाला होगा, प्रत्यक्षता होगी। तो इस विशेषता में नम्बरवन बनो। इसके लिए जो अपना मूल संस्कार है, उसको मिटाकर बापदादा के संस्कारों को कॉपी कर समान और सम्पूर्ण बनो तब हर एक से बाप दिखाई देगा और प्रत्यक्षता होगी।

20) संगठित रूप में आप ब्राह्मण बच्चों की आपस के सम्पर्क की भाषा अव्यक्त भाव की होनी चाहिए। जैसे फरिश्ते अथवा आत्मायें आत्माओं से बोल रही हैं। इसके लिए किसी की सुनी हुई गलती को संकल्प में भी न स्वीकार करना और न कराना। ऐसी जब स्थिति हो तब ही बाप की जो शुभ कामना है - एकमत संगठन की, वह प्रैक्टिकल में होगी और आपके द्वारा बाप प्रत्यक्ष होगा।

21) एकता के लिए एक रूहानी तावीज़ सदा अपने पास रखना कि रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। यह रिगार्ड का रिकार्ड सफलता का अविनाशी रिकार्ड हो जायेगा। मुख पर एक ही सफलता का मन्त्र हो - ''पहले आप'' – यह महामन्त्र मन से पक्का रहे। यथार्थ रूप से पहले मैं को मिटाकर दूसरे को आगे बढ़ाना सो अपना बढ़ना समझते हुए इस महामन्त्र को आगे बढ़ाते सफलता को पाते रहो, यह मन्त्र और तावीज़ सदा साथ रहे तो प्रत्यक्षता का नगाड़ा बज जायेगा।

22) धर्म सत्ता वालों के सामने पवित्रता की शक्ति और राज्य सत्ता वालों के आगे एकता की शक्ति को सिद्ध करो। इन दोनों ही शक्तियों को सिद्ध करने से ईश्वरीय सत्ता का झण्डा बहुत सहज लहरा जायेगा। अभी इन दोनों की तरफ विशेष अटेन्शन चाहिए। जितना-जितना प्युरिटी और युनिटी की शक्ति से उन्हों के समीप सम्पर्क में आते रहेंगे उतना वह स्वयं ही अपना वर्णन करने लगेंगे।

23) संगठन को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए वाणी की शक्ति पर विशेष ध्यान दो। वाणी सदा निर्मल हो, कम बोलो, धीरे बोलो और मीठा बोलो। सम्मानजनक बोल ही बोलो। अभी तक साधारण बोल ज्यादा हैं। 'अलौकिक बोल हों, फरिश्तों के बोल हों', हर बोल मधुर हो। अभी इस बात पर अन्डरलाइन करो तब प्रत्यक्षता होगी।

24) बाप की प्रत्यक्षता का आधार है - साधारण कार्य में रहते हुए भी फरिश्ते की चाल और हाल हो। ऐसे नहीं कहो कि क्या करें बात ही ऐसी थी, काम ही ऐसा था, सरकमस्टांश ऐसे थे, समस्या ऐसी थी इसलिए साधारणता आ गई। किसी समय भी, किसी हालत में भी आपका अलौकिक स्वरूप हर एक को अनुभव हो। जैसी बात वैसा अपना स्वरूप नहीं बनाओ। बातें आपको बदल न दें तब सबके समीप आयेंगे और एकता का संगठन मजबूत होगा।

25) आपमें जो भी विशेषतायें हैं, उनको सामने रखो, कमजोरियों को नहीं, तो अपने आप में फेथ रहेगा। कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचना, तो सदा खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे। प्रैक्टिकल में अनेक देश, अनेक भाषायें, अनेक रूप-रंग लेकिन अनेकता में भी सबके दिल में एकता है ना! क्योंकि दिल में एक बाप है। एक श्रीमत पर चलने वाले हो। अनेक भाषाओं में होते हुए भी मन का गीत, मन की भाषा एक है।

26) बापदादा चाहते हैं कि बच्चों की पहले साथियों में, सेवा में, वायुमण्डल में एकता हो, फिर एक बल एक भरोसा, एकमत हो तब सेवा में सफलता मिलेगी। जैसे नारियल तोड़कर, रिबन काटकर उद्घाटन करते हो, ऐसे एकमत, एकबल, एक भरोसा और एकता की रिबन काटो और फिर सर्व के सन्तुष्टता, प्रसन्नता का नारियल तोड़ो। यह पानी धरनी में डालो फिर देखो सफलता कितनी होती है।

27) स्व उन्नति और सेवा की उन्नति दोनों में एक ने कहा, दूसरे ने हाँ जी किया, ऐसे सदा एकता और दृढ़ता से बढ़ते चलो। जैसे दादियों की एकता और दृढ़ता का संगठन पक्का है, ऐसे आप रत्नों का भी संगठन पक्का हो, तो संगठन की शक्ति जो चाहे वह कर सकती है। संगठन की निशानी का यादगार है पांच पाण्डव।

28) बापदादा चाहते हैं कि हर बच्चा एकरस श्रेष्ठ स्थिति के आसनधारी, एकान्तवासी, अशरीरी, एकता स्थापक, एकनामी, एकॉनामी का अवतार बने। एक दो के विचारों को समझ, सम्मान दे, एक दो को इशारा दे, लेन-देन कर आपस में संगठन की शक्ति का स्वरूप प्रत्यक्ष करो क्योंकि आपके संगठन के एकता की शक्ति सारे ब्राह्मण परिवार को संगठन में लाने के निमित्त बनेगी।

(त्रिमूर्ति दादियों द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षायें)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 21-01-2026 *मधुबन*

गुल्जार दादी जी की अनमोल शिक्षायें

"कर्मातीत बनने के लिए कर्मेन्द्रिय जीत बन कर्मेन्द्रियों से कर्म कराओ"

(14-11-11)

आप सभी सेवा और मिलन मनाने के लिये अपने घर में पहुँच गये हो। यह चांस भी हर ज़ोन को मिलता है और खुशी-खुशी से सब निभा रहे हैं। इस चांस से सारे ब्राह्मण परिवार को नज़दीक से देखने को मिलता है। सेवा का बल भी मिलता है, फल भी मिलता है। किसी की भी सेवा करो तो पहले अपनी भी अवस्था ऐसी ही बनती है तब उसकी सेवा होती है। तो सेवा का बल अपने में भरता है और जिसकी सेवा करते हैं उनमें भी बल आता है। सेवा के चांस को प्यार से स्वीकार करके सेवायें कर रहे हैं और करते रहेंगे। सभी ऐसा सेवा का चांस लेने में खुश हैं, हम भी खुश हैं और जिस टर्न की सेवा होती है, उन पर बाबा की भी स्पेशल नज़र रहती है। यहाँ पर कोई भी सेवा करते सुबह से शाम तक सभी के मुख पर बाबा बाबा शब्द ही निकलता है। मन में भी सिवाए बाप के और कुछ याद नहीं आता। यहाँ के वायुमण्डल में हर एक बाबा की मस्ती में रहता है इसलिए बाबा के अलावा और कुछ याद आता ही नहीं है। सेवा के यह 8-10 दिन जीवन के विशेष दिन हैं इसलिए इसे एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गँवाना क्योंकि यहाँ सब प्रकार की मदद है तो उसका लाभ लो। अपने में जो भी कमी-कमजोरी, गलतियाँ समझते हो, यहाँ बाबा के घर में छोड़के, परिवर्तन करके जाओ तो बल मिलेगा। यहाँ शक्तिशाली आत्माओं को देख करके अपनी गलती जल्दी समझ में आती है, मेरे में यह है, यह है तो वो महसूसता होती है। योगयुक्त होके अमृतवेले बाबा को सुनाके बाबा से वरदान ले सकते हैं। बाबा ने तो वरदान देने लिये ऑफर किया है लेकिन उसे लेने लिये स्थिति भी ऐसी चाहिए। चलते-चलते पुरुषार्थ ढीला होने का कारण है दृढ़ता में कमी आ जाती है। दृढ़ता माना करना ही है और